तत्त्वार्थ सूत्र

अधिकार- 10

मोक्षाधिकार

Presentation Developed By:
Smt Sarika Vikas Chabra

www.JainKosh.org

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम्॥1॥

- मोहनीय कर्म का क्षय होने से
- ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्म का क्षय होने से
- केवलज्ञान होता है।

www.JainKosh.org

मोक्ष

द्रव्य मोक्ष

कर्मों का आत्मा से सर्वथा पृथक होना

भाव मोक्ष

रत्नत्रय की पूर्णता

www.JainKosh.org

मोक्ष के पहले केवलज्ञान की उत्पत्ति

घातिया कर्म	क्षय किस गुणस्थान में?
१. दर्शन मोहनीय	4 से 7 किसी एक में
२. चारित्र मोहनीय	10 के अंत में
३. ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय	12 के अंत में

फल

केवलज्ञान की उत्पत्ति 13 वे गुणस्थान में

www.JainKosh.org

अरिहंत बनने के कितने समय बाद सिद्ध बनते हैं?

कम से कम	ज्यादा से ज्यादा
अंतर्मुहूर्त	१ करोड पूर्व-

1 पूर्व = (84 लाख)^2 = 70,56,000 करोड वर्ष

केवलज्ञान कब होता है ?

क्षपक बारहवें गुणस्थान के उपान्त्य समय में निद्रा और प्रचला कर्म का नाशकर

अन्त समय में पाँच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तराय कर्म का नाश कर

मुनिराज केवली हो जाते हैं।

"मोहज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयात् केवलं" ऐसे समासान्त पद की रचना करके लघु सूत्र क्यों नहीं बनाया ?

सूत्र में समास न करके मोहक्षय का पृथक् प्रयोग क्रमिक क्षय की सूचना देने के लिए है

क्योंकि प्रथम मोहनीय कर्म का क्षय करके

अन्तर्मुहूर्त तक क्षीणकषाय पद को प्राप्त करके

तदनन्तर एक साथ ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय कर्मों का क्षय करके

केवलज्ञान प्राप्त करता है।

www.JainKosh.org

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः॥2॥

- बन्ध के कारणों का अभाव और निर्जरा के द्वारा सम्पूर्ण कर्मों के नाश हो जाने को मोक्ष कहा है।

www.JainKosh.org

मोक्ष के कारण

बन्ध के कारणों का अभाव

निर्जरा

मिथ्यादर्शन

अविरति

प्रमाद

कषाय

योग

www.JainKosh.org

कर्म का अभाव कितने प्रकार से होता है ?

अयत्न साध्य

- चरम शरीरी के नरकायु, तिर्यञ्चायु और देवायु का अभाव अयत्न साध्य है, क्योंकि इनका स्वयं अभाव है।

यत्न साध्य

- शेष कर्मों का अभाव यत्नसाध्य है क्योंकि इनका अभाव किया जाता है।

www.JainKosh.org

भगवान के कर्मों का क्षय पहले होता है या मोक्ष पहले ?

जिस प्रकार प्रकाश की उत्पत्ति और अन्धकार का विनाश एक साथ होता है

उसी प्रकार निर्वाण की उत्पत्ति और कर्म का विनाश एक साथ होता है।

www.JainKosh.org

औपशमिकादि भव्यत्वानां च ॥3॥

- मोक्ष में औपशमिकादि भावों और भव्यत्व भाव का भी अभाव हो जाता है।

www.JainKosh.org

सूत्र में 'भव्यत्वं' भाव का ग्रहण किसलिए किया है ?

पारिणामिक भावों में जीवत्व भाव की

मोक्ष में अनिवृत्ति के लिए

भव्यत्व भाव का ग्रहण किया गया है।

www.JainKosh.org

मोक्ष होने पर किन भावों का अभाव होता है?

भाव	क्यों?
औपशमिक	कर्म के निमित्त से होते थे
क्षायोपशमिक	
औदयिक	
पारिणामिक – भव्यत्व	रत्नत्रय की पूर्णता हो गई
पारिणामिक - अभव्यत्व	मोक्षगामी के पहले ही नहीं था

www.JainKosh.org

3 प्रकार के कर्मों का नाश होने पर मोक्ष

	द्रव्य कर्म	भाव कर्म	नोकर्म
स्वरूप	आत्मा से सम्बद्ध कार्मण वर्गणा रुप पुद्गल स्कंध	मोह राग-द्वेष रुपी विकारी भाव	शरीर और उससे संबन्धित पदार्थ
नाश कैसे होता है?	भाव कर्म के नाश से	जीव के पुरुषार्थ से	द्रव्य कर्म के नाश से

www.JainKosh.org

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः॥4॥

- मोक्ष में केवल सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन और सिद्धत्व इन चार भावों का क्षय नहीं होता है।

www.JainKosh.org

मोक्ष होने पर किन भावों का सद्भाव होता है?

भाव	क्यों?
क्षायिक सम्यक्त्व	प्रतिपक्षी कर्म का अभाव होने से
क्षायिक ज्ञान	
क्षायिक दर्शन	
क्षायिक वीर्य	
पारिणामिक - जीवत्व	कर्म निरपेक्ष स्वभाव

www.JainKosh.org

यदि मुक्त जीव के ये 4 ही क्षायिक भाव शेष रहते हैं तो अनंत वीर्य, अनंत सुख आदि भावों का अभाव कहलाया?

नहीं कहलाया, क्योंकि

अनंत वीर्य आदि भाव अनंत ज्ञान, दर्शन के अविनाभावी हैं,

उसके साथ अनंत वीर्य होगा ही

और बिना ज्ञान के सुख का अनुभव नहीं होगा

अतः अनंत सुख भी होगा ही ।

www.JainKosh.org

सिद्धों में कौन-कौन से गुण पाये जाते हैं ?

क्षायिक सम्यक्त्व

अनन्तज्ञान

अनन्तदर्शन

अनन्तवीर्य

सूक्ष्मत्व

अवगाहनत्व

अगुरुलघुत्व

अव्याबाधत्व

www.JainKosh.org

8 कर्मों के अभाव से प्रकट 8 गुण

गुण	कर्म
अनंत ज्ञान	ज्ञानावरणीय
अनंत दर्शन	दर्शनावरणीय
अनंत वीर्य	अंतराय
क्षायिक सम्यक्त्व	मोहनीय
अव्याबाधत्व	वेदनीय
अवगाहनत्व	आयु
सूक्ष्मत्व	नाम
अगुरुलघुत्व	गोत्र

www.JainKosh.org

मुक्त जीवों का कोई आकार नहीं है अतः उनका अभाव ही समझना चाहिए ?

जिस शरीर से जीव मुक्त होता है,

उस शरीर का जैसा आकार होता है

वैसा ही मुक्त जीव का आकार होता है ।

www.JainKosh.org

किंचित न्यून पुरुषाकार अर्थात्

अंतिम शरीर से कुछ कम कैसे ? -

नाक के छेद, पेट की पोल के

मक्खी के पँख जितनी पतली सबसे ऊपर वाली चमडी की परत के जितने क्षेत्र से कम

यदि जीव का आकार शरीर के आकार के अनुसार ही होता है तो शरीर का अभाव हो जाने पर जीव को समस्त लोकाकाश में फैल जाना चाहिए, क्योंकि उसका स्वाभाविक परिणमन तो लोकाकाश के प्रदेशों बराबर बताया है?

नहीं, क्योंकि आत्मा के प्रदेशों में संकोच विस्तार का कारण नामकर्म था,

मुक्त होने पर नामकर्म का अभाव होने पर संकोच और विस्तार का भी अभाव हो गया ।

www.JainKosh.org

यदि कारण का अभाव होने से जीव में संकोच विस्तार नहीं होता तो गमन का कारण नहीं होने से, जैसे मुक्त जीव नीचे, तिरछे को नहीं जाता वैसे ही ऊपर को भी नहीं जाना चाहिए, बल्कि जहाँ मुक्त हुआ है वहीँ सदा रहना चाहिए ?

www.JainKosh.org

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्या-लोकान्तात्॥5॥

- तदनन्तर मुक्त जीव लोक के अन्त तक ऊपर जाता है ॥5॥

पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्-बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च॥6॥

- पूर्वप्रयोग से, संग का अभाव होने से, बन्धन के टूटने से और वैसा गमन करना स्वभाव होने से मुक्त जीव ऊर्ध्वगमन करता है ॥6॥

www.JainKosh.org

आविद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च॥7॥

- घुमाये गये कुम्हार के चक्र के समान, लेप से मुक्त हुई तूमड़ी के समान, एरण्ड के बीज के समान और अग्नि की शिखा के समान ॥7॥

धर्मास्तिकायाभावात्॥8॥

- धर्मास्तिकाय का अभाव होने से मुक्त जीव लोकान्त से और ऊपर नहीं जाता ॥8॥

www.JainKosh.org

लोक का अग्रभाग अर्थात्

- अष्टम पृथवी के बीचों-बीच
- सिद्ध शिला से ठीक ऊपर
- तनु वातवलय में
- मनुष्य लोक के ठीक ऊपर

अष्टम पृथ्वी- ईषत प्राग्भार

कहाँ है	• सर्वार्थसिद्धि की ध्वजा से 12 योजन ऊपर
मोटाई	• 8 योजन
लम्बाई	• 7 राजू
चौड़ाई	• 1 राजू

www.JainKosh.org

सिद्ध शिला

कहाँ है?	• अष्टम पृथ्वी के मध्य में
आकार	• आधे कटे निम्बू के समान
व्यास	• 45 लाख योजन
मोटाई	• मध्य में 8 योजन • क्रम से घटकर 1 अंगुल

www.JainKosh.org

मोक्ष होने के बाद आत्मा लोक के अंत तक ऊपर जाता है

क्यों?

	हेतु	दृष्टांत
1	पूर्व प्रयोग से	घुमाया हुआ कुम्हार का चक्र
2	संग का अभाव	लेप से मुक्त हुई तुमड़ी
3	बंधन का टूटना	बीजकोश के बंधन से मुक्त हुआ एरंड बीज
4	ऊर्ध्व गमन स्वभाव	अग्नि की शिखा

लोकाग्र के आगे गमन क्यों नहीं होता है?

धर्मास्तिकाय का अभाव होने से

www.JainKosh.org

क्षेत्र-काल-गति-लिङ्ग-तीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधित-ज्ञानावगाहनान्तर-संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः॥9॥

- क्षेत्र, काल, गति, लिंग, तीर्थ, चारित्र, प्रत्येकबुद्ध, बोधितबुद्ध, ज्ञान, अवगाहना, अन्तर, संख्या और अल्पबहुत्व इन द्वारा सिद्ध जीव विभाग करने योग्य हैं ॥9॥

www.JainKosh.org

मुक्त जीवों में भेद नहीं है

आत्मिक सुख, ज्ञान, दर्शन
वीर्यादि अनंत गुणों की अपेक्षा

www.JainKosh.org

प्रत्युत्पन्न नय

- जो नय केवल वर्तमान पर्याय को ग्रहण करता है अथवा यथार्थ वस्तुस्वरूप को ग्रहण करता है ।

भूत प्रज्ञापन नय

- जो नय अतीत पर्याय को ग्रहण करता है ।

www.JainKosh.org

क्षेत्र की अपेक्षा भेद

प्रत्युत्पन्न नय की अपेक्षा

- सिद्धक्षेत्र
- स्वप्रदेश
- आकाशप्रदेश में

भूतप्रज्ञापन नय की अपेक्षा

- जन्म अपेक्षा 15 कर्मभूमियों में
- संहरण की अपेक्षा मनुष्य लोक में

www.JainKosh.org

काल

प्रत्युत्पन्न नय की अपेक्षा

- एक समय में ही सिद्ध

भूत प्रज्ञापन नय की अपेक्षा दो भेद हैं

- (१) जन्म से - उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के सुषम-सुषमा के अन्त भाग में और दुःषम-सुषमा में उत्पन्न हुआ
- (२) संहरण से - संहरण की अपेक्षा- सभी कालों में

www.JainKosh.org

गति

सिद्ध गति

एकान्तरगति की अपेक्षा चारों गतियों में सिद्धि होती है,

अनन्तरगति भूतनय की अपेक्षा मनुष्य गति में ही सिद्धि होती है।

www.JainKosh.org

किस लिङ्ग से मुक्ति होती है ?

वर्तमान नय की अपेक्षा-

अवेद अवस्था में

अतीत गोचर नय की अपेक्षा –

तीनों वेदों से

www.JainKosh.org

किस तीर्थ में मुक्ति होती है?

तीर्थसिद्धि दो प्रकार की होती है-

(१) तीर्थंकर रूप से

(२) तीर्थंकर भिन्न रूप से।

www.JainKosh.org

किस चारित्र से सिद्ध होते हैं ?

प्रत्युत्पन्न नय

- चारित्र-अचारित्र के अभाव में

भूतप्रज्ञापननय की अपेक्षा दो प्रकार है

- अनन्तर- यथाख्यात चारित्र से सिद्धि होती है।
- व्यवधान - चार (सामायिक, छेदोस्थापना, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात), पाँच (सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात) चारित्रों को प्राप्त कर मुक्त होते हैं।

www.JainKosh.org

प्रत्येकबुद्ध और बोधितबुद्ध कौन होते हैं ?

प्रत्येक बुद्ध

- कुछ प्रत्येकबुद्ध सिद्ध होते हैं जो परोपदेश के बिना स्वशक्ति से ही ज्ञानातिशय प्राप्त करते हैं।

बोधित बुद्ध

- कुछ बोधित बुद्ध होते हैं जो परोपदेशपूर्वक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

www.JainKosh.org

कितने ज्ञानों से मुक्त होते हैं ?

प्रत्युत्पन्न नय की अपेक्षा

- केवलज्ञान

भूत प्रज्ञापन नय की दृष्टि से

- मति, श्रुत इन दोनों से,
- मति, श्रुत और अवधि इन तीन ज्ञानों से वा
- मति, श्रुत और मनः पर्यय इन तीन ज्ञानों से तथा
- मति-श्रुत-अवधि और मनः पर्यय इन चारों से

www.JainKosh.org

कितनी अवगाहना वाले सिद्ध होते हैं ?

अवगाहना

उत्कृष्ट अवगाहना	जघन्य अवगाहना	मध्य अवगाहना
पाँच सौ पच्चीस धनुष है	कुछ कम साढ़े तीन अरत्नि प्रमाण है।	अनेक विकल्प होते हैं।

प्रत्युत्पन्न भावप्रज्ञापन नय

- अंतिम शरीर से कुछ कम

भूतप्रज्ञापन नयापेक्षा

- उत्कृष्ट अवगाहना 525 धनुष, जघन्य अवगाहना 3.5 हाथ प्रमाण से और मध्य में अनेक विकल्पों से सिद्धि होती है।

www.JainKosh.org

सिद्ध होने में कितना अन्तर पड़ता है ?

अंतर		निरंतर होने का काल	
जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
एक समय	छह मास	2 समय	8 समय

www.JainKosh.org

संख्या -जितने जीव एक साथ मोक्ष जाते हैं उसे संख्या कहते हैं।

संख्या

जघन्य	उत्कृष्ट
1	108

www.JainKosh.org

अल्पबहुत्व (सिद्ध होने वाले जीवों की तुलना)

	कम से ज्यादा ⟶
1. क्षेत्र	लवणसमुद्र < कालोदधि समुद्र < जम्बूद्वीप धातकी खण्ड द्वीप < पुष्करार्द्ध द्वीप
2. काल	उत्सर्पिणी < अवसर्पिणी < दोनों से रहित (विदेह क्षेत्र में परिवर्तन नहीं)
3. गति(भूत अपेक्षा) किस गति से आकर	तिर्यंच गति < मनुष्य गति < नरक गति < देव गति
4.लिंग(भूत अपेक्षा)	भाव नपुंसक वेद < भाव स्त्री वेद <भाव पुरुषवेद
5. तीर्थ	तीर्थंकर केवली < सामान्य केवली
6.चारित्र(भूत अपेक्षा)	5 चारित्र वाले < 4 चारित्र वाले
7.प्रत्येक-बोधितबुद्ध	प्रत्येक बुद्ध < बोधित बुद्ध
8.ज्ञान(भूत अपेक्षा)	2 ज्ञानधारी < 4 ज्ञानधारी < 3 ज्ञानधारी
9. अवगाहना	जघन्य अवगाहना < उत्कृष्ट अवगाहना < मध्यम अवगाहना
10. अंतर	6 माह के अंतर से <1 समय के अंतर से < मध्य के अंतर से
11. संख्या(1 समय में सिद्ध)	108 जीव < 107-50 जीव < 49-25 जीव < 24-1 जीव

किन-किन ग्रंथों के बीज इस ग्रन्थ में?

- मूलाचार
  - 9वा अधिकार
- रत्नकरंड श्रावकाचार
  - 7वा अधिकार
- गोम्मटसार जीवकाण्ड
  - 2रा अधिकार
- गोम्मटसार कर्मकाण्ड
  - 6, 8वा अधिकार
- त्रिलोकसार, तिलोय-पण्णत्ति
  - 3, 4था अधिकार
- पंचास्तिकाय, द्रव्य-संग्रह
  - 5वा अधिकार
- प्रवचनसार
  - 1ला अधिकार
- समयसार
  - 2, 5वा अधिकार
- लब्धिसार
  - 10वा अधिकार
- परीक्षा मुख (न्याय ग्रंथ)
  - 1ला अधिकार

www.JainKosh.org

- Reference : तत्त्वार्थमञ्जूषा, तत्त्वार्थसूत्र - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में
- Presentation developed by :Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889